



## प्रेस विज्ञप्ति

### आईआईटी भुवनेश्वर ने भारतीय ज्ञान प्रणाली पर टॉक का आयोजन किया

**भुवनेश्वर, 1 दिसंबर 2024:** भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) भुवनेश्वर ने हाल ही में प्रोफेसर बी महादेवन (पूर्व प्रोफेसर आईआईएम बेंगलोर) द्वारा 'लकड़ी के बक्से में खजाना: भारतीय ज्ञान प्रणाली (अवलोकन और प्रासंगिकता)' शीर्षक से एक वार्ता आयोजित की है। प्रोफेसर महादेवन के पास भारतीय प्रबंधन संस्थान बेंगलोर (आईआईएमबी) और आईआईटी दिल्ली और एक्सएलआरआई, जमशेदपुर जैसे अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों में शिक्षण, अनुसंधान, परामर्श और अकादमिक प्रशासन में 30 वर्षों का व्यापक अनुभव है।

बातचीत का उद्देश्य औपचारिक रूप से भारत ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) की धारणा को पेश करना और आईकेएस के कुछ अंशों को सामने लाना था। इसमें गणित, खगोल विज्ञान, नगर नियोजन, धातु और धातुकर्म, स्वास्थ्य और सार्वजनिक प्रशासन जैसे क्षेत्रों में भारतीय समाज द्वारा किए गए कई उल्लेखनीय योगदानों पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

प्रोफेसर महादेवन की प्रस्तुति ने विभिन्न क्षेत्रों में इसकी विशाल ऐतिहासिक गहराई को प्रदर्शित करते हुए भारतीय ज्ञान प्रणाली की खोज की। उन्होंने प्राचीन गणित और खगोल विज्ञान (डायोफेन्टाइन समीकरण और संख्या प्रणाली सहित) से लेकर वास्तुशिल्प चमत्कार (जैसे जैसलमेर किला और कोणार्क सूर्य मंदिर) और धातुकर्म उपलब्धियों (जैसे वुट्ज़ स्टील) तक के उदाहरण प्रस्तुत किए। उनकी बातचीत में सिंचाई, जल प्रबंधन और असेंबली हॉल के निर्माण में आईकेएस के योगदान पर भी प्रकाश डाला गया। उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं और औपनिवेशिक नीतियों के कारण आईकेएस की गिरावट पर भी चर्चा की और इसके संरक्षण और पुनरुद्धार की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रोफेसर महादेवन ने कहा: “भारत एक लंबा सभ्यतागत इतिहास वाला देश है, जिसमें दर्ज इतिहास, सांस्कृतिक कलाकृतियाँ और साक्ष्य पाँच सहस्राब्दी से अधिक अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं। एक सहस्राब्दी से अधिक समय तक विदेशी आक्रमणों के निरंतर हमले के बावजूद, भारतीयों द्वारा विकसित ज्ञान प्रथाएँ लगभग बरकरार रहीं और पीढ़ी दर पीढ़ी "मौखिक रूप से" हस्तांतरित होती रहीं। इन्हें सामूहिक रूप से भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। ज्ञान का समृद्ध भंडार होने के बावजूद, भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन विचारों को जानबूझकर नजरअंदाज और दरकिनार कर दिया गया है। संभवतः, ऐसा इसलिए है क्योंकि ब्रिटिश शासन के तहत शैक्षिक नीति ने स्वदेशी ज्ञान प्रणाली पर जोर देने का विकल्प चुना और इसके बजाय लगभग 200 साल पहले पश्चिमी ज्ञान के आधार पर एक विकल्प तैयार किया। इससे भारतीय ज्ञान प्रणाली में एक असंतोष पैदा हो गया है।”

प्रोफेसर श्रीपाद कर्मलकर, निदेशक, श्री बामदेव आचार्य, रजिस्ट्रार, संस्थान के संकाय सदस्य, कर्मचारी और छात्र वार्ता में शामिल हुए और वक्ता के साथ बातचीत की। डॉ. विजयकृष्ण कारी, प्रोफेसर-इन-चार्ज (सेमिनार) ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

-----